रिकॉर्ड :– मुझको सहारा देने वाले.... ओम् शांति। ये है पतित–पावन ज्ञान सागर, गीता ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, शिवबाबा की महिमा। जमाने में तो कोई ऐसा मनुष्य नहीं। जमाना ही पतित है। पतित, पतित को पावन नहीं कर सकते। यह तो सभी जानते हैं कि यह पतित दुनिया है। कॉंग्रेस पति गाँधी भी जानते थे कि हम सभी पतित हैं। पावन करने वाला एक है। अब फिर पतित ही अपन को श्री–श्री जगत्गुरु कहलाए रहे हैं। ये गुरु लोग ही सबसे पतित हैं, जो कहते हैं कि हम जगतगुरु हैं। ये है अशुद्ध अहंकार। सभी विकारों से पहला नम्बर यही अहंकार है। बाद में फिर और विकार आते हैं। मैं ईश्वर हूँ वा सभी ईश्वर के रूप हैं, जिसको ईश्वर सर्वव्यापी कहते हैं– ये हो गया सबसे बड़ा अहंकार। तो सभी से पतित हैं यही साधु–सन्यासी, जो अपन को जगत्गुरु कहलाते हैं। ये तो बच्चे जानते हैं कि सारी सृष्टि का आम और भारत का खास दुश्मन है ये रावण, 5 विकार। अब दशहरा आवेगा तो रावण का बड़ा बुत बनाए जलावेंगे। उनको यह पता नहीं कि रावण भी होली पर जलाया जाता है। बरोबर भंभोर को आग लगी थी और यादव और कौरव विनाश हुए थे। बाकी पाण्डवों की विजय हुई थी, जिन्होंने शिवबाबा की मदद से भारत को पावन बनाया था। आज होली का दिन है। होली और दशहरा। अब देखो, पतित मनुष्य क्या करते हैं! उन्हों को पतित चीज़ अच्छी लगती है। वे आज के दिन खूब शराब, भांग पिकर विषय सागर में गोते खावेंगे और फिर गोबर आदि से एक/दो को स्नान कराएँगे। भल कोई वज़ीर हो वा अमीर हो। आज के दिन खूब शराब पी विषय सागर में गोते खाएँगे, घुर डालेंगे। वास्तव में आज का दिन है एक/दो को अमृत पिलाए मनुष्य को देवता बनाने का। भारतवासी तो समझते नहीं कि हमारा दुश्मन असली कौन है। वो तो समझते हैं, चीन, पाकिस्तान है। उसके लिए डिफेन्स मिनिस्टर बनाए हैं कि हमको इन दुश्मनों से डिफेंड करे। इन कंगालों को यह पता नहीं कि हमारा सबसे भारी दुश्मन रावण है। उस पर ही जीत पानी है। चीन वा पाकिस्तान पर जीत पाने से कोई दुख से लिबरेट नहीं हो सकते। उसके लिए तो माया रावण से लिबरेट होना है। इन विकारों में पहला दुश्मन है अशुद्ध देह–अभिमान के साथ अशुद्ध अहंकार। अपन को ईश्वर मानना अथवा शिवोहम्, ईश्वर सर्वव्यापी कहना; जैसे कहते हैं अहम् आत्मा सो प०। ऐसे अहंकार वालों को ही हिरण्यकश्यप जैसे दैत्य कहा जाता है। ये अहंकार तो सभी को है; और इस अहंकार में ले आने वाले हैं साधु–संत। तो सबसे बड़े दुश्मन ये हुए, जो अपने को ईश्वर कहलाए और अपनी पूजा कराते हैं। दिखाते हैं कि हिरण्यकश्यप को भगवान ने थंभ से निकल मारा। अब प० कोई थंम से थोड़े ही निकलता है। वो तो आकर सारी दुनिया को इस रावण से छुड़ाता है। इस पर जीत पहनने लिए शक्ति चाहिए। वो शक्ति सर्वशक्तिवान से शक्ति सेना को मिलती है। तो अब बच्चों को डायरैक्शन मिलते हैं कि डिफेन्स मिनिस्टर को भी लिखना चाहिए कि सबसे बड़ा दुश्मन तो ये माया है। अब रावण का ही राज्य है। भारत का दुश्मन कोई चीन नहीं। आधा कल्प के ये 5 विकार रूपी रावण दुश्मन हैं। भारत को कंगाल, पतित बनाने वाला ये रावण है। भारतवासियों को इन पर जीत पानी है। इनसे बचना है। ऐसी–2 चिट्ठियाँ भी बुद्धिवान बच्चे लिख सकते हैं। डिफेन्स मिनिस्टर, हेल्थ मिनिस्टर, वेल्थ मिनिस्टर आदि को भी लिखना चाहिए कि भारत की हेल्थ, वेल्थ इस रावण ने लूटी है। इस पर जीत पाने से भारत एवर हेल्दी, एवर वेल्दी, एवर हैपी बन जाएगा। बाकी ये ऑर्डिनेन्स निकालना कि उतना कैरेट सोना पहनो आदि–2, उससे कोई भारत एवरवेल्दी नहीं बनेगा। भारत में, सतयुग में सोने के महल थे। यह तो ये आसुरी सम्प्रदाय जानती नहीं कि भारत कितना माला

माल था। ..... ज़रा–पुर्जा बचा है। वो भी देकर गोलियाँ, बारूद खरीद करते हैं और फिर शास्त्रों ..... देते हैं कि फलाणा ऋषि ऐसे कहकर गया कि ज़रूरत पर घर का सोना (बे)चना पड़े। दाँत का सोना भी .....; परन्तु ये सब वेद–शास्त्र तो दंत–कथाएँ हैं। भक्तिमार्ग अर्थात् दुर्गति में ले जाने लिए इनका आधार लेते हैं। अब यह समझाने लिए बच्चे अच्छे बुद्धिवान चाहिए। तुमको सर्वशक्तिवान से अथॉरिटी मिलती है; परन्तु समझाने वाला खुद भी ऐसा मायाजीत हो। अब सभी ने तो जीत पाई नहीं है, पाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। उसमें भी नम्बरवार हैं। तो जो समझते हैं, हम अच्छी रीत जीत पहन रहे हैं, ऐसे–2 को चिट्ठी लिखनी चाहिए– डिफेन्स मिनिस्टर, हेल्थ मिनिस्टर, फिनैन्स मिनिस्टर को। उनकी कॉपियाँ फिर सभी मिनिस्टर्स को भेज देनी हैं। इसमें बुद्धि अच्छी, लाइन क्लीयर चाहिए। कोई के भी नाम–रूप में फँसा हुआ न हो। जैसे बाप कहते हैं– बच्चे, नगन हो रहो, अपन को आत्मा समझ बाप से योग लगाओ, जहाँ से शक्ति मिले; तब ही रावण पर जीत पाए सकेंगे। मनुष्यों को तो पता नहीं है कि भारत का खास और दुनिया का आम यह रावण ही दुश्मन है। उस पर विजय पाने की शक्ति उस सर्वशक्तिवान से ही मिल सकती है। ये पतित लोग फिर अपन को जगतगुरु कहलाते हैं। अपन पर जगतगुरु के साथ श्री–श्री 108 का टाइटल भी लगाए देते। सभी से जास्ती पतित तो ये हैं। अहंकार भी बहुत खराब है। पावन बनने लिए स्नान भी करते रहते हैं; परन्तु पावन होते नहीं, नहीं तो घड़ी–2 स्नान क्यों करने जाए! बच्चों को बात करने की बड़ी अथॉरिटी मिलती है; परन्तु धारण करने की ताकत न है। ... योग पूरा चाहिए। तो बाबा समझाते हैं, चिट्ठियाँ आदि लिखने की बड़ी युक्तियाँ चाहिए। हेल्थ मिलेगी योग से, वेल्थ मिलेगी ज्ञान से। हेल्थ–वेल्थ है तो हैपीनेस भी है। सबसे जास्ती कमजोर भारत को इस रावण ने बनाया है। कोई ताकत न रही है; क्योंकि इरिलीजियस बन गया है। रिलीजन इज़ माइट कहा हुआ है। तुम जानते हो कि जब हम सो देवता है तो कितनी ताकत है। तुम सृष्टि के मालिक बन जाते हो; इसलिए अब योगबल से माया पर जीत पहन रहे हो। उन दुश्मनों को कोई भी नहीं जानते हैं। न साधु–महात्मा, न प्रेसिडेंट–मिनिस्टर, एम.पी.–एम.एल. .... जानते हैं। तो मु(ख्य)–2 को लिखना चाहिए। देखो, भारत अब कितना इमॉरल है। वैश्यालय है। मॉरैलिटी को शिवालय कहा जाता है। ज़रूर शिव ने ही भारत को शिवालय बनाया है। अब ....(रावण) ने वैश्यालय बनाया है। तो अब बाप डायरैक्शन देते हैं कि सभी को इस रावण पर जीत पाने की ..... को पत्र लिखो। अब ये डायरैक्शन सभी को मिल रहा है; परन्तु कोई विरला अमल करे; क्योंकि बच्चों को पता नहीं लगता कि ये कौन डायरैक्शन दे रहे हैं– बाबा है वा दादा है। बहुत बच्चे मूँझते हैं। शिवबाबा समझाए रहे हैं, तुम सबका सद्गति दाता तो मैं हूँ। तुम बच्चों को मुझे याद करना चाहिए। मैं ही तुमको सच्ची सद्गति करने की राय दे रहा हूँ। अब तुम सभी को मेरे साथ ..... है। चिट्ठी भी सदैव मेरे नाम लिखो– शिवबाबा **c/o** ब्रह्मा। मेरे पोस्ट ऑफिस में ब्रह्मा है; परन्तु फिर भी बी.के. का नाम लिखते रहते हैं। इससे सिद्ध है कि शिवबाबा को याद नहीं करते हैं। तो अवस्था भी ज़ोर नहीं भरती है। जैसे इंजेक्शन भरा जाता है तो सूई दवा में डाल फिर सूई नीचे, दवाई ऊपर की जाती है, नहीं तो इंजेक्शन भर न सके। अपना शिवबाबा भी आया है। इनसे नित्य योग लगाना है। ऐसा बेहद का बाप तो कब मिल नहीं स(कता)। उनसे तो पूरा वर्सा लेना है। उनको याद करने से तेरे में भी पवित्रता, सुख–शांति समा जावेगी। बुद्धि अथवा आत्मा वर्सा पाए लेगी। देखो, देवताएँ कितने सुखी हैं और

और अब ये यादव–कौरव सम्प्रदाय कितनी दुखी हैं! पाण्डव सम्प्रदाय के लिए तो लिखा है– अतिन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप–गोपियों से पूछो, जिन्हों को गीता का भगवान राजयोग सिखलाए रहे हैं नर से नारायण बनने। अब मनुष्यों को इतला करना है। बुद्धिहीन अंधे के औलाद अंधों को आइना चाहिए, चिट्ठी लिखना चाहिए, चित्र देना चाहिए। दिव्य चक्षु देने वाला है ही एक प्रभु, तब तो कहते हैं नैनहीन को....। उनको न जानने कारण ही कह देते, अहम् प्रभु; इसलिए इनको हिरण्यकश्यप कहा जाता है। तो ऐसे–2 पत्र लिख कॉपी बाबा को भेज दे। टीचर एस.ए. देते हैं तो बैठ बनाना चाहिए। लिखने वाले मुख्य तो संजय है। संजय का कर्तव्य ही था, अंधों को ज्ञान का नेत्र देना। एक संजय वा एक अ(र्जु)न वा एक द्रौपदी नहीं थी। संजय तो बहुत हैं; परन्तु गाए तब जाए जब बाप का डायरैक्शन अमल में लाए। प्रेसिडेंट को भी लिखना चाहिए। डिफेन्स मिनिस्टर जो डिसमिस हुआ उनको लिखना चाहिए– तुमको डिसमिस कर दिया, अब आए माया रावण को जीतना सीखो। समझाना अपना काम है, फिर तकदीर में होगा तो जागेंगे। कुंभकर्ण के नींद में सोए हुए हैं। बेहद की ब्रह्मा की रात है। एकदम तमोप्रधान हैं। आखिर क्रोध में आए रक्त की नदियाँ बहाएँगे। क्रोध बिगर तो मौत हो न सके। काम से मौत नहीं होता। अब सभी की विनाश काले विपरीत बुद्धि है। नम्बरवन विपरीत बुद्धि है इन साधु–संतों की। गवर्मेन्ट की भी साधु–समाज बनी हुई है। उनकी मत पर चलती है। उनको यह पता नहीं कि सबसे बड़े पापात्मा ये गुरु हैं। तो उनको लिखना चाहिए, डरना नहीं चाहिए; यह तो भगवानुवाच है। तो पतित–पावन तो एक ही है, तो डायरैक्शन दे रहे हैं कि ऐसे–2 बाण मारो तो कुंभकर्ण के नींद से जागेंगे। ये भीष्म, द्रौणाचार्य आदि अंत में जागने तो हैं। इसमें हिंसा की तो बात नहीं। इन ज्ञान बाणों की बात है। इन्हों को अहंकार बहुत है। भला लाखों फॉलोअर्स हैं। शिवानंद के कितने फॉलोअर्स हैं; परन्तु प्रेसिडेंट भी उनके पास जाता है; परन्तु फॉलो कहाँ कहते हैं। तो सन्यासी, ये गृहस्थी; वो विख का सेवन करने वाले, वो सन्यास करने वाले। कितना फर्क हो गया। वे तो और ही शिवोहम् कह बाप से बेमुख करते हैं। तो ये सब बातें समझने, धारण करने की हैं; और लिखने वाला चाहिए भी महारथी। महारथी हमेशा थोड़े होते हैं। घोड़े सवार उससे जास्ती, प्यादे उनसे जास्ती। करोड़ (पद), चीफ एक होता है, फिर छोटे–2 मेजर–जनरल बहुत होते हैं। प्यादे उनसे जास्ती होते। तो तेरी भी यह रूहानी सेना है। रावण माया तो भारत को पाताल ले गया है। उनको ऊपर ले आना तो बाप का काम है। नर से ना० बनाने की सत्य कथा बाप बताए, भारत को स्वर्ग बनाते हैं। भारतवासी तो नहीं जानते कि स्वर्ग किस चीज़ का नाम है। बिल्कुल अंधे के औलाद अंधे हैं। हम भी थे; परन्तु बाबा ने अब सज्जा बनाया है। इस समय सारी दुनिया तो नास्तिक है। तो कितने दुखी हैं! हम आस्तिक बनने से कितने सुखी बनते हैं। यह खुशी भी उसको होगी जो निश्चय बुद्धि होगा। वो तो चकमक साथ चटक जाएगा। पहले तो आए बाप की आशीर्वाद अथवा वरदान ले फिर जाए सर्विस करे। जैसे वो ... आशीर्वाद ले लड़ाई पर जाते हैं ना। तो पहले जब बाबा पास आए, पवित्रता का बीड़ा उठाए, गोद ले, फिर लड़ाई के मैदान में जावे, वो सच्चा बच्चा। बाकी ऐसे आने वाले तो ढेर हैं। दूर बैठे कहते हैं– बाबा, हम आपके हैं। फाफा मारते हैं। उनको कली कहा जाए, फूल नहीं कहेंगे। बाप माना बाप। बाप निश्चय करने में कोई पुरुषार्थ वा मेहनत नहीं करनी होती। गोदली बच्चा बाप को जान लिया। ऐसे थोड़े ही बड़ा होकर बाप को जानेंगे। वहाँ ऑरगन्स छोटे हैं। तेरे तो ऑरगन्स बड़े हैं। बाप तो स्वर्ग की राजाई देते हैं, ऐसे बाप के पास तो दौड़कर आना चाहिए; परन्तु जिनकी तकदीर हो, वो तो सर्विस करने लग पड़ेंगे, मानुष को देवता बनाने का कार्य करेंगे, कब हंगामा न मचाएँगे। कोई भी विकार का नशा आया तो उसको भूतनाथ कहा जाता है। ऐसे दास–दासियाँ

जाकर बनेंगे। हमको बहुत रहमदिल बनना है। बाबा कहते हैं– बच्चे, सुखदाई बनो, मंसा–वाचा–कर्मणा किसको दुख न दो। भल पवित्र तो यहाँ रहते हैं; परन्तु फिर भूत हैरान करते हैं। इसमें बड़ी मेहनत चाहिए, नहीं तो पद भ्रष्ट हो पड़ते हैं। ये ह्युमन रेस है। बाबा के गले का हार बनना है। बाबा को याद करेंगे तो जायदाद भी याद आएगी। बाप को पूरा याद नहीं करते तो जायदाद भी कम मिलती है। गाँधी को भारत का बापू कहते हैं; परन्तु बाप से वर्सा क्या मिला? ये तो बात के पुला बहुत खाते हैं। मेयर को भी फादर ऑफ सिटी कहते हैं। ऐसे तो पादरी को भी स्टूडेंट्स फादर कहते हैं। फिर वो तो टीचर है, उनसे पढ़ाई का वर्सा मिलता है। सच्चा–2 फादर तो ये हैं, जिससे स्वर्ग की बादशाही मिलती है। तो ऐसे बाप, जिससे बेहद का वर्सा मिलता है, उनको कितना याद करना चाहिए। उनके डायरैक्शन अमल में लाने हैं। बाबा सभी के प्रति डायरैक्शन देते हैं, जो मु(ख्य)–2 हैं। देहली में जगदीश है, राजकुमार है; और भी बहुत हैं। कानपुर में संतराम है, गुप्ता त्रिलोकचंद है। बाबा तो सभी को कहते हैं। ऐसे नहीं कि एक कान से सुना, दूसरे से निकला। ऐसी–2 चिट्ठियाँ लिखो तो सर्विस जल्दी–2 बढ़े। करोड़ो को ज्ञान मिलना है। बहुत सर्विस करनी है। डरना नहीं है। यह भी लगा हुआ है कि कृष्ण को जेल में डाला। यह भी कोई बड़ी बात नहीं। औरंगजेब ने भी अपने बाप, भाइयों को जेल में डाला था। आजकल तो भाई–2 का खून करते हैं। चीनी, हिन्दू भाई–2 कहते थे, अब एक/दो को मार रहे हैं। आज वज़ीर हैं, कल जेल में डाल देते हैं। राजा को तख्त से उतार गोली से उड़ाय देते हैं। अच्छा, आज तो होली है। दुनिया तो धुर ब(र)साती है। यहाँ तेरे पर ज्ञान वर्षा हो रही है। कहाँ भी निमंत्रण मिले तो खुशी से सर्विस कर आना चाहिए। हम है ईश्वरी(य) औलाद। वास्तव में तो सभी हैं; परन्तु जबकि बाप को जाने। ईश्वरी(य) औलाद तब बने जब ब्रह्मा मुखवंशावली बने। सो तो होती है संगम पर। इस समय ही बाप सन्मुख आते हैं। आत्मा प० अलग रहे.... अब बाप इस तन द्वारा तुम बच्चों के सन्मुख बैठा है तुम बच्चों को वर्सा देने। बेहद के बाप का वर्सा भी बेहद का है। आधा कल्प के बड़े दुश्मनों का किसको भी पता नहीं है। तुम जानते हो, इन पर जीत पानी है। हमारी रसम–रिवाज़ दुनिया से निराला है। हम तो यज्ञ का पवित्र प्रसाद करके भेजते हैं। यज्ञ प्रसादी खाएँगे तो हृदय शुद्ध होगा। आसुरी दुनिया से काम तो निकालना पड़ता है। हम परदेशी हैं। जैसे बाबा आया है वैसे हम भी आए हैं स्वर्ग की स्थापना करने। तो अब अपने स्वीट होम को याद करना है जहाँ अब लौटना है। यह चक्कर हमारा लगता ही रहता है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ

चेम्बूर :– ब्राह्मणों को सच्ची गीता ज़रूर सुनानी है। बखर जिसमें भरा होगा, वो तो दौड़ता रहेगा, एक जगह नहीं ठहरेगा। इस समय ऐसी भागने वाली मनोहर बेटी है। कोई–2 तो बहुत सुस्त हैं। ऐसे थोड़े ही समझना चाहिए कि हमारे जाने से स्टूडेंट्स टूट पड़ेंगे। गवर्मेन्ट भी टीचर्स चेंज करती है। जहाँ अच्छा समझते हैं वहाँ अच्छा टीचर भेजती है। तो ऐसे थोड़े ही टीचर बदली हो तो स्टूडेंट फां हो जाते हैं। उन(को) तो कच्ची कलियाँ कहा जाएँ। बाप कहते हैं मनमनाभव। इसपर नहीं चलते और दोष रखते हैं, हमारी बी.के. चली गई तब ऐसा हुआ। शिवबाबा, जिसका वर्सा मिलता है, उनको भूल बी.के. में फँस जाते हैं। ऐसे नहीं, नए–2 सेन्टर्स खोलते जाना है। पहले तो अपने घर में सेन्टर खोलना चाहिए। ऐसे बहुत निकलेंगे जो 7 रोज़ में समझ अपन घर में सेन्टर खोलेंगे। ॐ